लिए हाथों में हाथ, चलें साथ साथ

असीम

प्रशिक्षण माड्यूल

माता शिक्षक संघ

जला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद
राज्य परियोजना कार्यालय
लखनऊ

माता शिक्षक संघ प्रशिक्षण माड्यूल के उद्देश्य

1. विद्यालय में बालिकाओं के आवश्यकतानुसार सहभागी/मित्रवत् शैक्षिक वातावरण बनाने में सहयोग करने का कौशल विकसित करना।
2. बालिकाओं के सन्दर्भ में समुदाय से सम्पर्क करके विद्यालय के प्रति लगाव उत्पन्न करना ताकि बालिकाएं विद्यालय जा सके के लिये संघों को जागरूक करना।
3. माताओं/शिक्षिकाओं एवं समुदाय को बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाना।
4. कक्षा सम्प्रेषण में बालिकाओं की ओर ध्यान देकर बालिका शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु प्रयास करना।
5. बालिकाओं का नामांकन कराना। उनकी नियमित उपस्थिति पर ध्यान कर उसे बनाये रखने के लिए प्रयास करना।
6. स्थानीय संसाधनों एवं अन्य विभागों से समन्वयक करके अपने विद्यालय को उपयोगी एवं प्रभावी बनाने के प्रयास।
7. विशेष रूप से बच्चों की सम्प्राप्ति के स्तर अर्थात् वे कितना सीख रहे हैं की जानकारी करने तथा उसमें वृद्धि हेतु सहायक बनाने हेतु जानकारी देना।

प्रशिक्षण किसके लिए ?

- माता शिक्षक संघ के सभी सदस्यों को जो बच्चों की माताएं हैं। अध्यापक हैं/अध्यापिका हैं और अभिभावक हैं।
- शिक्षक अभिभावक संघ के सदस्यों को जो बच्चों के अभिभावक हैं। माता हैं/पिता हैं, अध्यापक या अध्यापिका हैं।
- जो नहीं जानते कि बच्चों की शिक्षा के प्रति उनके क्या दायित्व हैं अपने बच्चों के सम्बन्ध में। पड़ोस के घर के बच्चों के सम्बन्ध में। गाँव के सब बच्चों के सम्बन्ध में। उनके नामांकन में। ठहराव में। स्कूल की आवश्यकताओं और उन सभी मुद्दों पर जो गाँव में सभी बच्चों की प्राथमिक शिक्षा को पूरा करने में सहायक हों।

<u>प्रशिक्षण के उद्देश्य</u>

- संगठन को मजबूती, स्थायित्व, कुशल नेतृत्व और अच्छा पर्यवेक्षक व सलाहकार बनाने के लिए।
- गाँव के हर बच्चे के माता पिता व अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा का महत्व बताने के लिए।
- विद्यालय में बालिकाओं के आवश्यकतानुसार सहभागी, मित्रवत् शैक्षिक वातावरण बनाने में भूमिका निभाने के लिए।
- बच्चों विशेष कर बालिकाओं के सन्दर्भ में समूहों से सम्पर्क करके विद्यालय के प्रति लगाव उत्पन्न करना ताकि सभी बालिकायें विद्यालय जा सके।
- कक्षा के वातावरण में बालिकाओं की पसन्द का ध्यान रखते हुए व्यवस्था में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कराना।
- बालिकाओं का नामांकन कराना एवं उनकी नियमित उपस्थिति पर ध्यान कर उसे बनाये रखने के लिए तैयार करना।
- स्थानीय संसाधनों व विभागीय संसाधनों के द्वारा विद्यालय सुदृढ़ीकरण में सहयोग करने के लिए तैयार करना।

<u>प्रशिक्षण से पहले</u>

- गाँव के विद्यालय में सभी अभिभावकों को आमन्त्रित कर एम०टी०ए०/पी०टी०ए० का गठन
- तिथि का निर्धारण एम०टी०ए०/पी०टी०ए० से विचार विमर्श के उपरान्त तय की जायें।
- गाँव का पूर्ण डाटा सांख्यिकी तैयार रखना।
- प्रशिक्षण की सूचना समय से सभी को देना।
- सभी प्रकार की आवश्यकता की सूची बनाकर जैसे – दरी, चार्ट, स्टेशनरी आदि की व्यवस्था करना।

प्रशिक्षण के समय

- प्रतिभागियों से चर्चा कर बिन्दु निकलवायें।
- सभी की जिम्मेदारी व दायित्व बांट दे। जैसे – भोजन, सफाई, लेखन व प्रतिवेदन आदि के कार्य अलग–अलग व्यक्तियों को बांट दिये जायें।
- फीड बैक कमेटी बनायी जायी जो दूसरे दिन अपना पहले दिन के प्रशिक्षण के कार्यवृत्त को प्रस्तुत करेंगे।
- चर्चा के समय सभी प्रतिभागियों से दो–दो बिन्दु पूछे जाये ताकि सभी को सहभागिता हो सके।
- ज्यादा बोलने वाले प्रतिभागी को नियंत्रित किया जायें व कम बोलने वाले को प्रेरित किया जायें।
- प्रशिक्षण को बोझिल न होने दें, प्रशिक्षण को रोचक बनने के लिए खेल व गतिविधि आदि करायी जायें।
- प्रशिक्षण के अन्तिम दिन आने वाले माह में PTA/MTA द्वारा किये गये संभावित कार्यो की योजना बनवायी जायें।
- PTA/MTA द्वारा उस माह के बाद पुनः मिलने की तिथि निर्धारित की जायें ताकि प्रशिक्षण के प्रभाव व उनके द्वारा किये गये कार्यो का मूल्यांकन किया जा सके व सामने आयी परेशानी का हल किया जा सके।

प्रशिक्षण के बाद

- प्रशिक्षण का कार्यवृत्त बनाकर बनायी गयी कार्य योजना के साथ कार्यालय को भेजा जायें।
- पूरे प्रशिक्षण का दस्तावेजीकरण किया जाये।
- जिस तिथि को बैठक निर्धारित हो अवश्य की जायें, उभरी हुई समस्या का समाधान किया जाये।
- प्राप्त सफलताओं की बैठक में चर्चा की जायें ताकि अन्य लोग लाभान्वित हो सके।

प्रशिक्षण के दौरान सुगमकर्ता को निम्न बातें ध्यान रखना चाहिए।

- संवाद बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें।
- सत्र बोझिल न होने दें।
- सभी प्रतिभागियों को बोलने व गतिविधि करवाने का समान अवसर दें।
- जो भी समूह से बात निकल कर आये उसे लिपिबद्व करें।
- अधिक से अधिक गतिविधि करवाकर चर्चा करें।
- प्रतिभागियों से ज्यादा से ज्यादा बात निकलवायें।
- प्रतिदिन प्रशिक्षण का मूल्याकंन करवायें।
- अगले दिन की तैयारी रात में कर लें।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण माड्यूल

पहला दिन	**११:०० से ११:४५**	परिचय खेलः • लो बसन्त आयो • गेंद फेंक कर • नमस्ते जी
	११:४५ से १२:००	गीत–शिक्षा के सन्देश को हम मुहल्ले • कार्यशाला के बारे में • नारी की समाज में स्थिति • बेटियों को न्याय–चित्र कथा का प्रस्तुतिकरण, चर्चा
	०१:३० से ०२:००	भोजनावकाश
	०२:०० से ०२:४५	महिला पुरूष संख्या में अन्तर • आकडों का प्रस्तुतिकरण • दिनचर्या • चर्चा
	०२:४५ से ०३:००	गीत– जोहि कोरिव बेटा जनम
दूसरा दिन	**११:०० से ११:१५**	गीत– माँ बहनो को पढ़ना सिखलायें
	११:१५ से ११:३०	पिछले दिन की गतिविधियों पर चर्चा
	११:३० से १२:३०	राधा की कहानी प्रस्तुतिकरण, चर्चा
	१२:३० से ०१:३०	महिला शिक्षा की स्थिति • प्रस्तूतिकरण • चर्चा
	०१:०० से ०२:००	भोजनावकाश
	०२:०० से ०२:४५	बालिका शिक्षा की स्थिति • प्रस्तुतिकरण • दिनचर्या बनवाना • चर्चा
	०२:४५ से ०३:००	गीत चेतनरों– जमाना
तीसरा दिन	**११:०० से ११:१५**	गीत–तोड़–तौड़ के बन्धनों को
	११:१५ से ११:३०	• माता शिक्षक संघ के – क्या – क्यों
	११:३० से ०१:००	• माता शिक्षक संघ के –कर्तव्य व दायित्व – फिल्म कोशिश – प्रस्तुतिकरण – चर्चा
	०१:०० से ०२:००	भोजनावकाश

	०२:०० से ०२:१५	गीत–पाठशाला खुला दो – गतिविधि
	०२:१५ से ०२:४५	फालोअप– वार्षिक कैलेण्डर
	०२:४५ से ०३:००	गीत व समापन मूल्याकंन – गीत जब बन ही गया नारे–

प्रथम दिवस

परिचय गीतः–

लो बसन्त आया फूल खिले फूल खिले

सभी प्रतिभागी एक गोले में बैठकर एक प्रतिभागी द्वारा ढोलक के साथ गायेगा– लो बसन्त आया फूल खिले फूल खिले एक कली प्यार वाली सुन्दर निखार वाली ' मीना' भी आई फूल खिले–फूल खिले। इसी गीत को समूह द्वारा दोहरायेगा इस तरह आगे नाम जुड़ता जायेगा।

गेंद फेकनाः गतिविधि–

सभी प्रतिभागी एक गोले में बैठकर एक प्रतिभागी द्वारा दूसरे प्रतिभागी के ऊपर गेंद फेकेगा और अपना नाम बतायेगा। इसी प्रकार दूसरा प्रतिभागी भी किसी प्रतिभागी के ऊपर गेंद फंकेगा और नाम बतायेगा इसी प्रकार का क्रम सभी प्रतिभागियों के साथ करना है।

गतिविधिः टेढ़े मेढ़े रास्तेः–

प्रतिभागियों को दो लाइनों में आमने–सामने मुँह करके खड़ा होने को कहेगें। उसके पश्चात उनसे कहेंगें कि आप टेढ़े मेढ़े रास्ते से होकर अपनी जगह पर वापस आयेगें अर्था त सीधे–२ ना चल कर आड़े–तिरछे रास्तों पर चलना है। फिर दुबारा प्रतिभागियों को टेढ़े मेढ़े रास्ते से होकर जाने को कहेगें और यह भी कहेगें कि जो भी रास्ते में मिलेगा उससे नमस्ते करना है। तीसरी बार प्रतिभागियों को पुनः टेढ़े मेढ़े रास्ते से होकर जाना है और रास्ते में जो भी मिलेगाा उससे हाथ मिलाना है। अन्त में प्रतिभागियो को टेढ़े मेढ़े रास्ते से होकर जाना है और रास्ते में जो भी मिलेगाा उसको अपना परिचय देगा।

नोटः जो भी चर्चा बिन्दु निकलकर आयें उसे सुगमकर्ता चार्ट में लिखते जायें।

गीतः– **समता के संदेश**

शिक्षा के संदेश को बहनो तक पहुँचाना है–२
गाँव–गाँव, टोले टोले हर मुहल्ले जाना है–
जागो बहनो भोर हुई, अब व्यर्थ समय क्यों खोती हो?
ठोकर खाकर दुनिया से,अकेले में क्यों रोती हो ?
भाई बहन को साथ लेकर नया समाज बनाना है।
गाँव–गाँव, टोले टोल हर मुहल्ले जाना है–२
जानो अपने हक को जानो,अपनी शक्ति को पहचानो।
अपनी दशा को तुम सुधारो,शिक्षा का हथियार अपनाओ।
भाई बहन को मिलजुल कर,समता की लड़ाई लड़नी है
गाँव–गाँव, टोले टोल हर मुहल्ले जाना है–२
सबसे पहले क्याहै करना,साक्षर बनना और बनाना।
आगे फिर है क्या करना, आपस में मिल जुलकर रहना।
भाई बहन को साथ होकर, मंजिल अपनी पाना है।
गाँव–गाँव, टोले टोल हर मुहल्ले जाना है–२

कार्यशाला के बारे मेंः–

<u>अपेक्षाएं–</u>

सबसे पहले प्रतिभागियों से कार्यशाला में आने के समय क्या उम्मीदें हैं? यह पूछा जायेगा। सम्भावित बिन्दु निम्न हो सकते हैं–

- सब लोग आ रहे थे हम भी आ गये।
- बहिन जी ने बुलाया इसलिए आये हैं।
- कुछ मिलेगा यह सोचकर आये।
- कुछ सीखनें को मिलेगा इसलिये आये।
- ज्ञान बढ़ेगा इसलिए आये।
- मालुम नही है यूहीं आ गये।
- भीड़ देखी चले आये।
- पता चला था मीटिंग है आ गये ।

उपरोक्त बिन्दुओ के अलावाभी कई तरह की अपेक्षाएं और निकलकर आएगी जिसे हमें निम्न बातों से स्पष्ट करना होगा।

- हमारा एक समूह है।
- यह समूह का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर हैजिसे हम एक दूसरे से सीखने का प्रयास करेंगे।
- समूह के सभी सदस्यों को तीनों दिन पूरे समय शामिल होना है।
- प्रशिक्षण में एक दूसरे को सीखने में पूरा सहयोग करेंगे।

नोटः चर्चा बिन्दु सुगमकर्ता चार्ट में लिखते जायें।

सुगमकर्त्ता गाँव की महिलाओं से गाँव की अच्छी बुरी घठनाओं के बारे में पूछें जो महिलाओं से सम्बन्धित है।
उदाहरण के लिए निम्न प्रकार की घटनाऐं हो सकती हैं–

बुरी घटना–

- कम उम्र में मृत्यु
- दहेज हत्या
- गर्भ के समय मृत्यु
- किसी महिला के साथ बलात्कार
- किसी बालिका के साथ बलात्कार

अच्छी घटना–

- किसी गरीब घर की लड़की पढ़ लिखकर किसी उॅचे पद पर कार्यरत है।
- किसी महिला द्वारा किया गया बहादुरी का कार्य।
- महिलाएं ट्रेक्टर /बैलगाड़ी चलाती हो।
- महिला ने पंच /सरपंच के रूप में सराहनीय कार्य किया।

उपरोक्त बिन्दु सुगमकर्ता को सहयोग के लिए दिये गये हैं। सुगमकर्ता को चाहिए कि वह उस गाँव से सम्बन्धित घटनाओं को निकलवाएं उसे लिपिबद्ध करें तथा उसके कारणों पर चर्चा करें। उपरोक त चर्चा के उपरान्त सुगमकर्ता किन्ही दो व प्रतिभाशाली महिलाओं का नाम प्रतिभागियों से पूछें जिन्हें वे जानती हैं। बाद में उनके द्वारा बतायी गयी महिलाएं क्यों चर्चित हुयीं इस पर चर्चा

प्रस्तुतिकरण – बेटियों को न्याय

– सुगमकर्ता पिछली चर्चा से इस विषय को जोड़ते हुए 'बेटियों को समाज' में न्याय नहीं मिल रहा है कैसे का इस चित्र को प्रदर्शित करें। सुगमकर्ता चित्र दिखातें समय यह ध्यान रखें कि महिलाओं को चित्र समझ में आ रहा है या नहीं। यह जानने के लिए कि वे चित्र को कितना समझ रहीं हैं उनसे पूछे कि उन्होंने चित्र में क्या देखा, क्या समझा और उसे लिपिबद्ध करते जायें।

चित्रकथा को दिखाने के बाद प्रतिभागियों से सुगमकर्ता निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे :–

- चित्र से लगता है कि समाज में, परिवार में औरतों का कुछ महत्व है ?
- बिना औरतों के घर परिवार चल सकता है ?
- क्या हमारे समाज में महिला का साथ दिया जाता है ?
- क्या महिला को देवी के समान माना जाता है ?
- बालक कुल का दीपक है ?
- बालिका होने से धरती धँस गई। कर्जवान घर में लड़की पैदा होती हैं।
- जानवर, पैसा, धन, खेत, कानून, बच्चे, रीति रिवाज सभी पुरूष के हैं हमारा क्या है ?
- महिला के हिस्से में क्या आया ?
- कुल का दीपक बिमार है डाक्टर के पास ले जाना है।
- लड़की बिमार है फालतू पैसा क्यों बर्बाद करना है।
- लड़का/लड़की दूसरी–दूसरी माँ से पैदा होते है।
- पढ़ लिख कर महिला बराबरी में आ सकती है।
- गर्भ में लड़की है तो गर्भपात करवाना है। क्या कुदरत की ये देन है ?

नोट – चर्चा बिन्दु सुगमकर्ता चार्ट पर लिखते जायें।

<u>महिलाएं कहाँ गयीं</u>

महिला – पुरुष में अन्तरः–

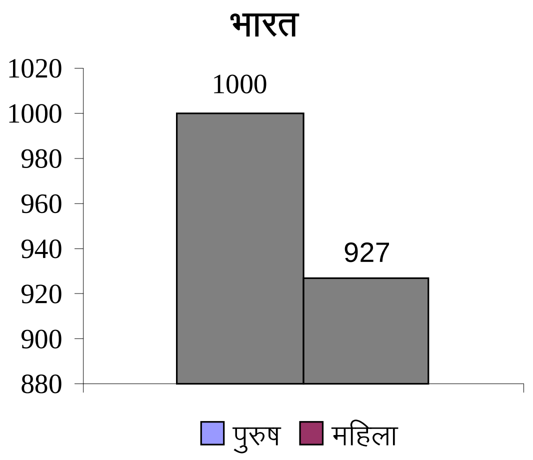

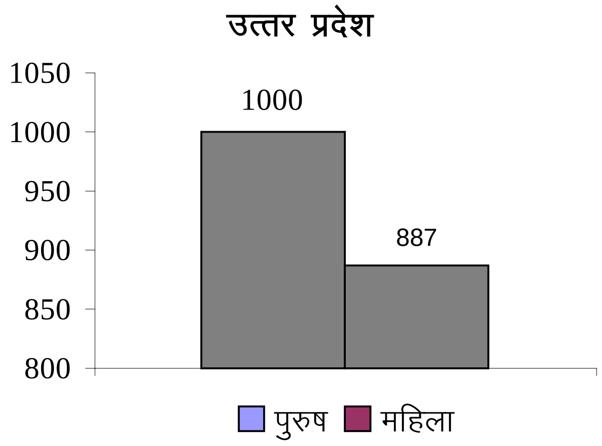

उपरोक्त आंकड़ों का बड़े चार्ट पर प्रस्तुतीकरण करके महिलाओं से पूछा जाय कि आंकड़े क्या कहते हैं? सम्भावित बिन्दु निम्न निकलेंगे–

* महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा कम है।
* ऐसा क्यों है? सम्भावित कारण इस प्रकार हो सकते हैं–
  - ➡ महिलाएं अधिक संख्या में मर रही हैं।
* महिला मृत्युदर किन कारणों से अधिक है?
  - ➡ भ्रूण हत्या
  - ➡ दहेज हत्या
  - ➡ गर्भावस्था के समय मृत्यु
  - ➡ बाल विवाह
  - ➡ बलात्कार
  - ➡ कुपोषण
  - ➡ बीमारी अधिक होना (**उस गाँव की महिलाएं कौन सी बीमारी की चपेट में अधिक हैं यह भी पूछना चाहिए**)
* महिलाओं द्वारा बोले गये सभी बिन्दुओं पर चर्चा करके यह स्पष्ट करना है कि वर्तमान में हमारे समाज में बालिकाओं की क्या स्थिति है तथा इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार हैं एवं क्या–क्या कारण हैं। इस पर विस्तृत चर्चा इस प्रकार कर सकते हैं जैसे–

1. आधुनिक समाज में भ्रूण परीक्षण करा कर लिंग ज्ञात कर लिया जाता है। यदि लड़की होती है तो इसे जन्म से पूर्व ही समाप्त कर दिया है।
2. बच्ची के जन्म होने से परिवार में किसी प्रकार की खुशी नहीं मनायी जाती है।
3. लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा पौष्टिक आहार भी कम दिया जाता है जिससे वे कमजोर व कुपोषित होती हैं एवं कभी–कभी तो मृत्यु भी हो जाती है।
4. ग्रामीण समाज में आज भी बालिकाओं का कम आयु में विवाह करने का रिवाज़ है जिसके कारण वह कम आयु में ही माँ बन जाती है। अधिकांशतः कम आयु की बालिकाओं की मृत्यु बच्चों को जन्म देते समय या जन्म के कुछ समय पश्चात् हो जाती है।
5. हमारे समाज में दहेज एक बहुत बड़ी समस्या है इसके चलते भी अधिकांशतः बालिकाओं की हत्या कर दी जाती है।

गीतः—

दू रंग नीतिया

जेहि कोखि बेटा जनमल वही कोखि बिटिया दू रंग नीतिया
काहे कयलऽ हो बाबूजी दू रंग नीतिया
बेटा जे जनमल से सोहर बधैया हमरे बेरिया
काहे मातम मनौवलऽ हमरे बेरिया।

बेटा के खेलई खातिर देलऽ मोटर गड़िया हमारे बेरिया
काहे चुल्हा, दुल्हा, गुड़िया हमारे बेरिया
काहे सुपती मौनियां हमारे बेरिया

बेटा के पढ़वे खातिर भेजलऽ स्कूलिया हमारे बेरिया
काहे गोइठा ठोकबौअलऽ हमारे बेरिया
काहे चुल्हा फुकबौअलऽ हमारे बेरिया

बेटा के बियाहे खातिर बन्हल पगड़िया हमारे बेरिया
काहे सिखा झुकौअलऽ हमारे बेरिया
काहे आँसू टपकौलऽ हमारे बेरिया
जेहि कोखि बेटा ....

अबहुँ से चेतऽ बाबूजी भेज स्कूलिया से हम बेरिया
बनबऽ एक दिन विदुषिया से हम बिटिया
करब कुल के उजागर से हम बिटिया

जेहि कोखि बेटा ....

****** **प्रथम दिवस समाप्त** ******

द्वितीय दिवस

गीतः–

<u>माँ बहनों को पढ़ना सिखायेंगे</u>

माँ बहनों को पढ़ना सिखायेंगे हम बदलेंगे जमाना
अक्षर की ज्योति जलायेंगे हम बदलेंगे जमाना

जाति धरम का झगड़ा न होगा
कोई पिछड़ा कोई अगड़ा न होगा
गीत समता के हिलमिल के गायेंगे
हम बदलेंगे जमाना
अक्षर की ज्योति ....
भाई के संग बहना भी लड़ेगीं,
भाई के संग बहना भी पढ़ेगीं।
हत्या, दहेज, अपमान न सहेंगी
बलात्कारी का नाम मिटायेंगे
हम बदलेंगे जमाना
अक्षर की ज्योति ....

बहन तेरा यहाँ भाई खड़ा है,
होगी पढ़ाई इस पर अड़ा है।
एक दूजे को अक्षर सिखायेंगे
हम बदलेंगे जमाना
अक्षर की ज्योति ....

<u>पिछले दिन की गतिविधियों पर चर्चा</u>–

* सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों से एक–एक करके पूछे कि पहले हमने क्या–क्या किया था तथा उसे क्रम बद्ध तरीके से लिखें।
* यह प्रयास करना चाहिए कि क्रम न टूटे और यदि क्रम टूट रहा हो तो स्वयं न बताकर प्रतिभागियों से ही निकलवाने का प्रयास करें
  यह भी अहसास करायें कि आज की बात वे ध्यान रखें जिससे अगले दिन बता सकें।

राधा की कहानी

जब मैंने होश सम्भाला तब मुझे पता चला कि मेरी भूमिका एक आज्ञाकारी बेटी की है। जब मैं बड़ी हुई तब मुझे यह लगातार याद दिलाया जाता था कि मैं पराया धन हूँ और मेरा धर्म एक निर्भर पत्नी एवं अर्पित माता का है। हालांकि मैं एक मेधावी छात्रा थी पर मेरी पढ़ाई रोक दी गई और मुझे केवल हाई–स्कूल तक पढ़ाया गया।

जब मैं बड़ी हुई और जब मेरा मासिक धर्म आरम्भ हुआ, मेरे परिवार वालों को मेरी शादी की चिन्ता होने लगी। हिन्दू धर्म के अनुसार मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को अशुद्ध माना जाता है। मुझे भी बिल्कुल अलग रखा जाता था और मुझसे एक अछूत की भांति व्यवहार किया जाता था। उस वक्त मुझे पता चला कि एक अछूत, शूद्र या दलित पर क्या गुजरती होगी जब लोग उनसे इस प्रकार का व्यवहार करते हैं।

दो वर्षों तक मेरे माँ–बाप मेरे लिए वर की तलाश में दर–दर की ठोकर खाते रहे। कुछ लड़के अपने सगे–सम्बन्धियों के साथ मुझे देखने भी आये और मुझे सज–धजकर उनके सामने नुमाइश करनी पड़ती। मैं सुन्दर नहीं थी, न ही मेरा रंग गोरा था इस कारण सभी लोग मुझे देखकर शादी के लिए नापसन्द करके चले जाते थे। क्योंकि सथी को खूबसूरत, गोरी लड़कियों की तलाश थी। आखिरकार एक परिवार ने मुझे अपने लड़के के लिए पसंद कर लिया। लेकिन उसके बाद दहेज को लेकर काफी विवाद रहा। मैं एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की थी। मेरे दो भाई और एक बहन थे जो स्कूल में पढ़ रहे थे। मेरे ससुराल की पूर्ति कर पाना मेरे पिता जी के लिए मुश्किल काम था। मेरे पिता जी मेरे सास–ससुर के सामने बहुत गिड़गिड़ाये और बड़ी मुश्किल से उन्होंने मांग को कुछ कम किया। मेरे पिता जी ने रु० 1000/- नकद, जेवर, 25 साड़ियाँ, बर्तन, टेप रिकार्डर, रेडियो इत्यादि चीजें मेरे दहेज में दीं। इसके लिए उन्हें कहीं से कर्ज लेना पड़ा। घर का वातावरण काफी तनावपूर्ण था। मुझे आश्चर्य होता था कि शादी खुशी का अवसर होता है या मातम का। तनाव के बावजूद मेरे माँ–बाप को तसल्ली थी कि उन्हें अब स्वर्ग की प्राप्ति होगी क्योंकि उन्होंने कन्यादान कर दिया है। मुझे लगा कि मैं एक चीज हूँ जो उपहार के रूप में दे दी जाऊँगी।

शादी वाले दिन मुझे खूब सजाया गया और मेरे पति मे अग्नि के चारों ओर सात बार परिक्रमा की। पण्डित मन्त्रोच्चारण करता रहा और मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान देता रहा। शादी के बाद मुझे अपने पति के घर रहना था। मुझे डर लग रहा था, इसलिए मैं रोई। मुझे भय था कि कहीं मेरे साथ दुर्व्यवहार तो नहीं होगा क्योंकि मैं जानती थी कि बहुओं के साथ लोग बुरा व्यवहार करते हैं, मार भी डालते हैं। लेकिन दूसरी ओर मैं रंगीन ख्वाबों में भी खो जाती थी।

पति के घर में मैं घर के कामों जैसे झाड़ू, पोंछा, कपड़े धोना, खाना बनाने में व्यस्त हो गई। काम के बावजूद मुझे तरह–तरह के ताने सुनने पड़ते क्योंकि मेरे पिता जी अधिक दहेज जुटा पाने में असमर्थ थे। हमारे देश में कई देवी–देवता हैं सबके लिए व्रत रख पाना तो मुमकिन नहीं था पर मुझे वो सारे व्रत रखने पड़ते जो मेरे पति की सुरक्षा एवं पुत्र प्राप्ति के लिए होते थे। मेरी सारी पूजा प्रार्थना व्यर्थ चली गई जब मैंने एक बेटी को जन्म दिया। घर में मातम छा गया। मेरे पति ने महीनों मुझसे बात नहीं की। मेरे सास–ससुर ने मेरे दुर्भाग्य पर ताने कसे। दुसरी बार जब मैं गर्भवती हुई तो मुझे धमकाया गया कि यदि मैं लड़के को जन्म देने में असमर्थ रही तो मुझे घर से निकाल दिया जाएगा और मेरे पति दूसरी शादी कर लेंगे।

भाग्सवश मैंने पुत्र को जन्म दिया। घर में खुशी का माहौल था। मेरे ससुराल वालों ने मिठाइयाँ बांटी। मुझे उस वक्त पता चला कि क्यों मेरी सहेली शीला ने अपनी बेटी को जन्म के तुरन्त बाद मार डाला था।

कभी–कभी मुझे बहुत गुस्सा आता है जब मेरी बेटी के साथ भेदभाव किया जाता है। आज मेरी शादी को सात साल हो गये हैं। मुझे अहसास हो गया है कि यदि मैं डरपोक, दब्बू और चुप रहूँगी तो कुछ नहीं होगा। इसलिए मैं अपनी बेटी के अधिकारों के लिए आवाज उठाऊँगी। मैं उसे खूब पढ़ाऊँगी जिससे वह अपने अधिकारों को समझे तथा पैरों पर खड़ी हो सके। उसे मैं अपनी तरह नहीं बनाना चाहती।

<u>सम्भावित चर्चा बिन्दुः–</u>

1- राधा अपनी कहानी में क्या कहना चाहती है?
2- क्या राधा की कहानी जानी पहचानी है?
3- यदि राधा पढ़ी–लिखी होती तो क्या उसके साथ इसी प्रकार की समस्या आती?
सुगमकर्त्ता को चाहिए कि महिलाओं से ज्यादा से ज्यादा प्रश्न निकलवाये, चार्ट पर लिखे तथा चर्चा करायें।

महिला शिक्षा

उद्देश्य

– प्रतिभागियों द्वारा महिला शिक्षा के महत्व की जानकारी प्राप्त करना।

– प्रतिभागियों का महिला शिक्षा हेतु क्रियाशील होने के लिए प्रेरित होना।

क्रियाकलाप

– सुगमकर्ता महिलाओं से उनके परिवार के तीन या चार पीढ़ी तक की महिलाओं की शिक्षा की स्थिति के बारे में पूँछे और चार्ट पर लिखें।

– प्रत्येक प्रतिभागी महिला सदस्यों की आत्मकथा के आधार पर भिन्न–भिन्न समय में उनकी शिक्षा स्थिति बताए तथा शिक्षित महिलाओं और अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक, सामाजिक व मानसिक स्थितियों में अंतर बताए।

– अपने क्षेत्र के दो ऐसे परिवर्तनों की चर्चा करें जो शिक्षित महिलाओं के कारण संभव हो सके हैं।

– पूरे समूह में चर्चा कर अशिक्षित महिला होने के नुकसान व शिक्षित महिला के महज्व को सूचीबद्ध करें एवं महिलाओं को शिक्षा के लिए प्ररित करने के लिए क्रियाकलाप चुनें एवं उनके क्रियानवयन हेतु उठाये जाने वाले उपाय सोचें।

– महिलाओं से किसी एक घटना बताने को कहे जिसमें न पढ़ने के कारण उन्हें दिक्कत महसूस हुयी तथा लिखे।

सुगमकर्ता महिलाओं से इस प्रकार प्रश्न करें कि अनपढ़ महिलाओं को किस–किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। महिला समूह द्वारा आये उत्तर को सुगमकर्ता लिपिबद्ध करते जायें तथा उस पर विस्तृत चर्चा करें।

सम्भावित विचारणीय बिंदु

– *अशिक्षित महिला और परिवार*

- हीन भावना से ग्रस्त
- संकोची स्वभाव
- उपेक्षित व्यवहार
- अधिक पाबंदी
- अन्याय की शिकार
- उत्तरदायित्व कार्यो से वंचित रखना।
- अधिक काम कम दाम।
- शोषण का शिकार

सुगमकर्ता पढ़ी लिखी महिला की पहचान के बिन्दु भी पूँछें।

सम्भावित विचारणीय बिंदु

– *शिक्षित महिला की पहचान*

- आत्म सम्मान
- आत्मविश्वास
- आत्मनिर्भरता
- आत्मनिर्णय
- सुरक्षित

सुगमकर्ता प्रतिभागियों से चर्चा करके बिन्दु निकालें तथा उन्हें चार्ट पर लिखते जायें एवं इस पर विस्तृत चर्चा करें।

बालिका शिक्षा

- पिछड़ापन
- कारण व निवारण

सुगमकर्ता पिछले अध्याय से इस अध्याय को जोड़ते हुए बताएं कि महिलाए कम पढी लिखी रहीं यही कारण है कि लड़कियों की शिक्षा पर बुरा प्रभाव पड़ा उसके बाद यह ग्राफ बड़े चार्ट पर बनाकर प्रस्तुत करें।

विषय : बालक – बालिका नामांकन की स्थिति

प्राथमिक विद्यालय में

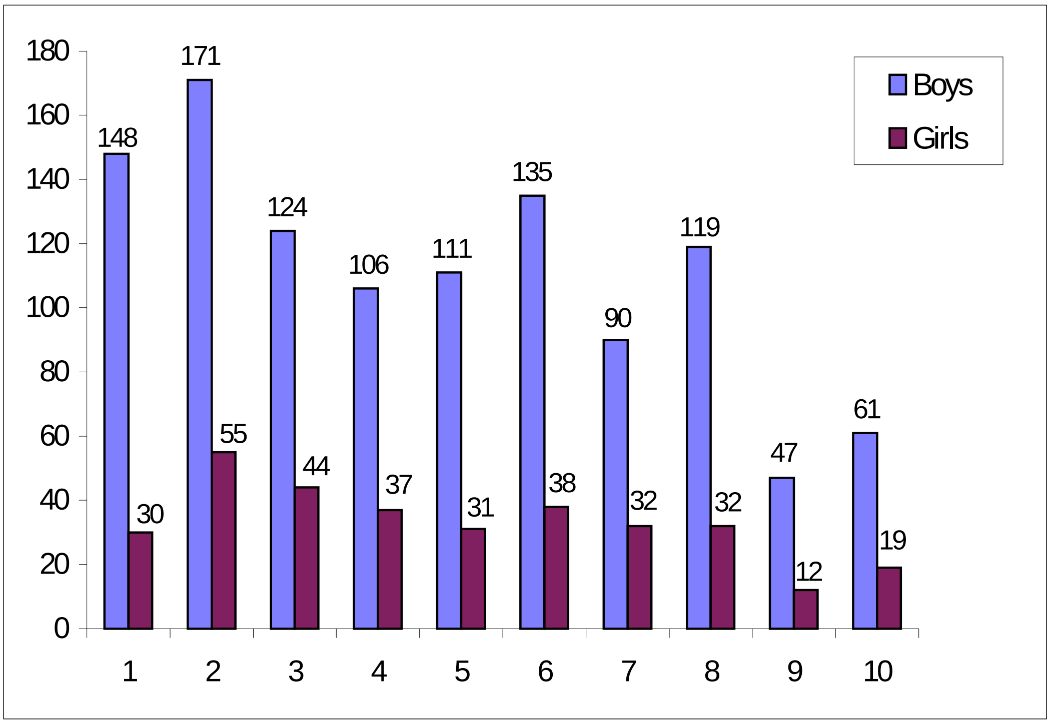

विकास खण्ड–सण्डीला **ज़िला हरदोई**

1. तिलोयाँ कला

2. मुन्नू खेड़ा

3. उमरताली

4. भूड़ खेड़ा

5. भिठौली

6. कुदौरी

7. शिवनगरा

8. भरही

9. कुर्नाटिमुर्क

10. विलीपुर गोंगांवा

आंकड़ो का विश्लेषण

सुगमकर्ता सर्वप्रथम विद्यालय जाने वाले बालक तथा बालिकाओं के बीच के अन्तर के आंकड़ों को चार्ट पर ग्राफ के रूप में बनाकर उन्हें एहसास कराये कि वास्तव में विद्यालय न जाने वाली बालिकाओं की संख्या बालको की तुलना में बहुत है। यह आंकड़ें सम्बंन्धित गाँव के ही होने चाहिए।

आंकड़ों पर चर्चा करने के बाद सुगमकर्ता बालिका शिक्षा के पिछड़ेपन के कारणों पर चर्चा करेंगे।

*** बालिका शिक्षा

** पिछड़ापन

* पिछड़ेपन के कारण तथा उन्हें दूर करने के उपाय

* कम उपलब्धि स्तर के कारण तथा वांछित उपलब्धि स्तर तक संवर्धन के उपाय

प्रस्तुतीकरण

सथियों ! इससे पूर्व हुई चर्चा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि बालिकाओं को शिक्षा के अवसर कम मिलते रहे है। जिन्हें अवसर मिलता है उनमें से भी अधिकांश उच्च स्तरीय शिक्षा तक नहीं पहुँच पाती। अतः आज के सत्र में हम बालिकाओं के शिक्षा में पिछ ड़ेपन के कारण तथा उनके निवारण एवं उनकी उपलब्धि स्तर के कारण जानकर उन्हें दूर करने के उपायों पर चर्चा करेंगें।

** पिछड़ापन

* पिछड़ेपन के कारण तथा उन्हें दूर करने के उपाय

उद्देश्य

बालिकाओं के शिक्षा में पिछड़ेपन के कारण जानना तथा उन्हें दूर करने के उपाय ढूढ़ना।

क्रियाकलाप

– सुगमकर्ता प्रतिभागियों से अनुभवों के आधार पर बालिकाओं के शिक्षा में पिछड़ेपन के कारणों की सूची तैयार करें।

– सुगमकर्ता दो समूहों में बैठकर बालिका शिक्षा के पिछड़ेपन के कारणों पर चर्चा करें।

मूल्याकंन बिंदु

बालिकाओं को शिक्षा के अधिक अवसर मिलें– इसके लिए आप क्या कदम उठाएंगे?

अध्ययन सामग्री

*** बालिका शिक्षा

** पिछड़ापन

* पिछड़ेपन के कारण तथा उन्हें दूर करने के उपाय

* कम उपलब्धि स्तर के कारण तथा उन्हे वांछित उपलब्धि स्तर तक संवर्धन के उपाय

सुगमकर्ता यह स्पष्ट करे कि बालिकाओं का उपलब्धि स्तर बहुत कम है। अतः उनकी शिक्षा का उचित विकास नहीं हो पाता। जिससे वे आर्थिक तथा सामाजिक रूप में पिछड़ी रह जाती हैं। इसलिए उनके पिछड़ेपन तथा कम उपलब्धि स्तर के कारण जानना तथा उनमें सुधार लाने के उपाय सोचना बहुत आवश्यक है। इस अध्ययन सामग्री में इन्हीं बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

पिछड़ेपन के कारण

ये कारण निम्नलिखित हो सकते हैंः–

– माता–पिता का अशिक्षित होना।

– बालिकाओं द्वारा घरेलू कार्यो एवं व्यवसायों में सहयोग दिया जाना।

– बालिकाओं द्वारा छोटे भाई बहिनों की देखभाल की जाना।

– गाँव के लोगों में बालिका शिक्षा के प्रति सोच का अभाव होना।

– कम आयु में विवाह, दहेज प्रथा, रूढ़िवादी विचार, लिंग भेदभाव, बालिका को पराया धन समझना जैसे सामाजिक कारणों का होना।

उपर्युक्त कारण, अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाते है। वे शिक्षा को गौण मानते है तथा व्यवसाय को प्रधानता देते हैं।

अतः बालिकाएँ घर के कार्यो या कमाई के धंधों में व्यस्त रहती है। इससे वे शिक्षा में पिछड़ी रह जाती हैं। हमें इन करणों को दूर करने के उपाय भी सोचने होंगे ताकि बालिकाओं को शिक्षा के अवसर मिल सकें और वे शिक्षित होकर परिवार तथा देश में वांछित विकास लाने में भागीदार बन सकें।

पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय

कुछ कारगर उपाय निम्नलिखित हो सकते है :–

– प्राथमिक शिक्षा कानून को कठोरता से लागू किया जाए।

– बालिकाओं का शत–प्रतिशत नामांकन करवाने वाले सरपंचों/अध्यापकों को सम्मानित किया जाए।

– विशेष प्रोत्साहन योजनाओं में अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग के साथ–साथ आर्थिक रूप से पिछड़े अन्य वर्ग की छात्राओं को भी लाभ पहुँचे।

– महिलाओं को प्रशासन में उचित स्थान दिया जाए।

– शिक्षा विभाग द्वारा पाँचवीं व आठवीं कक्षाओं में विशिष्टता प्राप्त छात्राओं को पुरस्कृत किया जाए।

– दूरस्थ गाँवों में नियुक्त अध्यापक/अध्यापिकाओं को निवास एवं सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाए।

– बुक बैंक की पुस्तकें शैक्षिक सत्र आरम्भ होने से पूर्व ही उपलब्ध कराई जाएं।

– माता पिता को जागरूक बनाने हेतु महिला मंडल, स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग लिया जाए।

– विद्यालय स्तर पर नियमित रूप से नामांकन, प्रतिधारण व ड्रापआउट से संबंधित आँकड़ों का रिकार्ड रखा जाए।

अनपढ़ बालिका

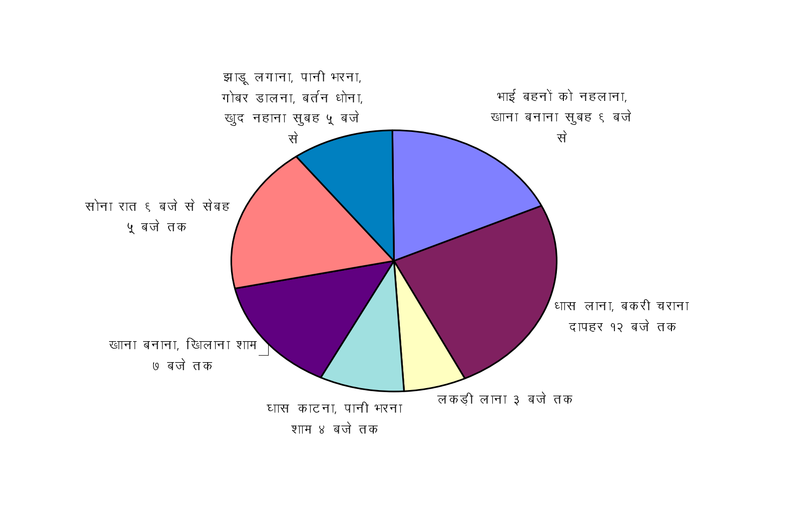

अनपढ़ बालक

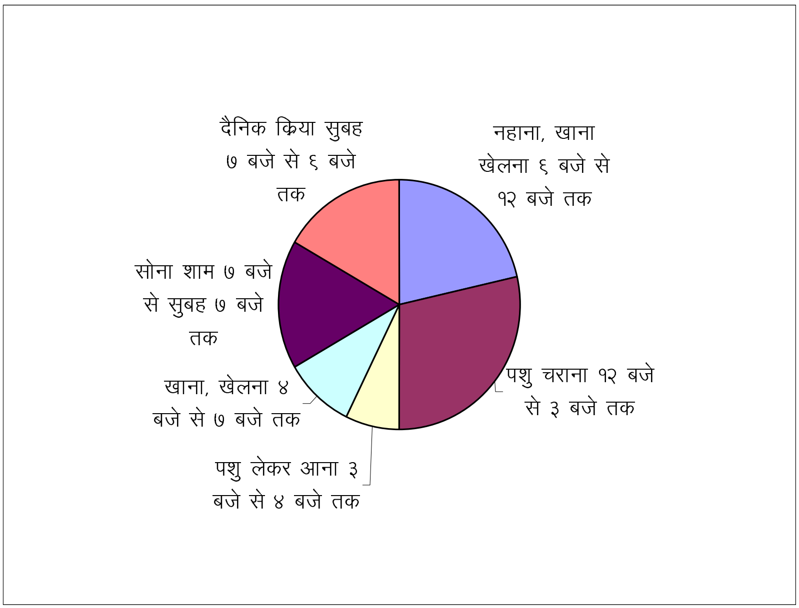

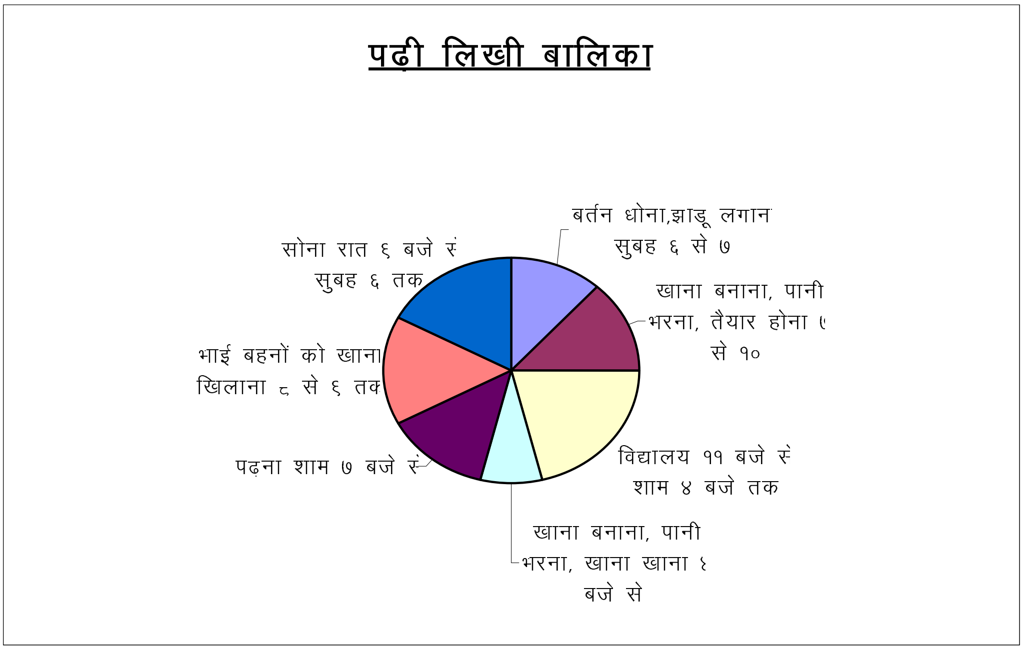
पढ़ी लिखी बालिका
बर्तन धोना,झाड़ू लगान
सुबह ६ से ७
खाना बनाना, पानी
भरना, तैयार होना ९
से १०
विद्यालय ११ बजे से
शाम ४ बजे तक
खाना बनाना, पानी
भरना, खाना खाना ६
बजे से
पढ़ना शाम ७ बजे से
भाई बहनों को खाना
खिलाना ८ से ६ तक
सोना रात ६ बजे से
सुबह ६ तक

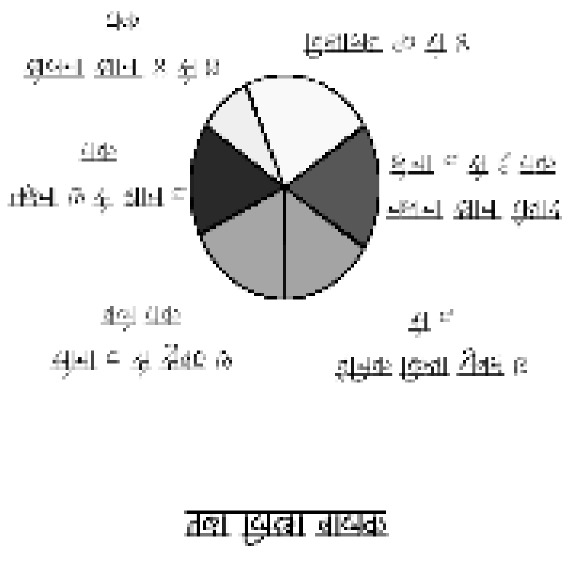

बालक / बलिकाओं की दिनचर्या में देखना है कि बालिका कितने घण्टें काम करती है और पढ़ने भी जाती है। दोनों के काम के समय में तुलना करना है।

चर्चा बिन्दू :–

- बालक की तुलना में बालिकाए अधिक काम करती हैं।
- पढ़ने के साथ–साथ बालिकाएं घर का काम संभालती हैं।
- काम के साथ बालिकाए पढ़ाई कर सकती हैं।
- बालिकाओं को बालक के बराबर पढ़ने का समय दिया जाता हैं
- बालिकाओं को काम का बोझ अधिक क्यों?
- बालकों की तरह बालिकाओं को समान अवसर दिया जाता है?

गीत :— बहना चेत सके तो चेत __

बहना चेत सके तो चेत ।

जमाना आया चेतन से

चेतन से जमाना चेतन से

बहना चेत सके तो चेत__

लड़का कड़की रोटी मांगे धन्धा करनो परसी

प्रेम एकता सभी बनालो, ग्रुप बनालो परसी

सहेली से साथ में, साथ निभा लो परसी

बहना चेत सके तो चेत__

राज करे यूँ काम माँगयो हो गया सगला बैरी

खुद मेहनत कर मत सोचे के पार पड़े न मेंरी

ऐ सगली मिल दुखड़ो सागे उड़णो पड़सी

बहना चेत सके तो चेत__

एक दो पहले चेती कुछ न करको आयो

दो चार के चेतवा से कुछ भणकारो आयो

गाँव की सब बहना मिलगी धरती पलटो खायो

बहना चेत सके तो चेत__

पाठशाला खुला दो

पाठशाला खुला दो महाराज, मोरा जिया पढ़ने को चाहे।

आम का पेड़ यह ठूँठा का ठूँठा काला हो गया हमारा अँगूठा।

यह कालिक मिटा दो महाराज, मोरा जिया पढ़ने को चाहे।

ज से जमीनदार क से करिंदा – ज से जमीनदार क से करिंदा

दोनो खा रहे हमको जिन्दा – दोनो खा रहे हमको जिन्दा

इन से पिण्ड छुड़ा दो महाराज, मोरे जिया पढ़ने को चाहे।

अगुनी भी यहाँ ज्ञान बधारे – अगुनी भी यहाँ ज्ञान बधारे।

पोथी बॉचे मन्तर उचारें – पोथी बॉचे मन्तर उचारें

कोई राह दिखा दो महाराज, मोरा जिया पढ़ने को चाहे।

पाठशाला खुला दो महाराज, मोरा जिया पढ़ने को चाहे।

माता शिक्षक संध

- **माता शिक्षक संध क्या है?**

माताओं और शिक्षकों का एक समूह है। जिसमें वे मातायें शामिल हैं।

1. जिनके बच्चे नियमित विद्यालय आते हैं
2. जिनके बच्चे बीच–बीच में विद्यालय नहीं आते हैं
3. जिनके बच्चे शाला त्याग चुके हों।
4. जिनके बच्चे कभी विद्यालय नहीं गये।

- **माता शिक्षक संध क्यों?**

  - ➢ विद्यालय से माताओं को जोड़ना।
  - ➢ विद्यालय को सुचारू ढ़ग से चलवाना।
  - ➢ शिक्षा व्यवस्था में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करवाना।
  - ➢ विद्यालय की समस्याओं को समुदाय से अवगत करवाना।
  - ➢ शिक्षक और समुदाय की दूरी को कम करना।

- **माता शिक्षक संध के दायित्व एवं कर्तव्यः–**

□ **नियमित विद्यालय भ्रमण**

□ माता शिक्षक संध का यह दायित्व है कि सप्ताह में एक बार वह विद्यालय भ्रमण अवश्य करे।

□ **विद्यालय भ्रमण के दौरान निम्न बाते देखनी हैं।**

□ **विद्यालय न जाने वाले बच्चों के अभिभावकों से सम्पर्क**

□ माता शिक्षक संध का यह दायित्व है कि विद्यालय न जाने वाले अभिभावकों से सम्पर्क कर नामाकंन कराये।

□ **बालिकाओं की समस्या को सुनना व समाधान करना**

□ माता शिक्षक संध को चाहिये कि नियमित बालिकाओं से चर्चा करें उनकी समस्याओं को सुने तथा उचित समाधान निकालें।

विद्यालय अनुदान का सही इस्तेमाल करवाना :–

विद्यालय को प्रति वर्ष निम्न अनुदान दिया जाता है :–

- विद्यालय के रख रखाव के लिए प्रधानाध्यापक को 2000/- प्रति वर्ष अनुदान दिया जाता है।
- सहायक सामग्री निर्माण हेतु 500/- प्रति अध्यापक प्रति वर्ष दिया जाता है।
- माता शिक्षक संघ का दायित्व है कि उपरोक्त धन का सही इस्तेमाल सुनिश्चित करवायें।

निशुल्क पुस्तकों का समय से वितरण करवाना :–

निशुल्क पुस्तकें समस्त बालिकाओं को तथा अनुसूचित जाति/जनजाति/अल्पसंख्यक बालकों को वितरीत किए जाने का प्रावधान है। माता शिक्षक संघ का दायित्व है कि समय से उक्त पुस्तकों का वितरण तथा अवलोकन करें।

पोषाहार तथा छात्रवृत्ति को समय–समय से बँटवाना :–

माता शिक्षक संघ की जिम्मेदारी है कि वे समय–समय पर बच्चों को मिलने वाले पोषाहार तथा छात्रवृत्ति को समय–समय पर बँटवायें तथा अवलोकन करें।

शिक्षकों की नियमित उपस्थिति देखना :–

माता शिक्षक संघ को चाहिए कि वह समय–समय पर विद्यालय जाकर यह देंखे कि वह अध्यापक समय से तथा प्रतिदिन विद्यालय आते हैं कि नहीं।

शालात्यागी बच्चों का पुनः नामांकन करवाना :–

माता शिक्षक संघ का यह दायित्व है कि जो बच्चे शालात्याग चुके हैं उनका पुनः विद्यालय में नामांकन करायें तथा शाला त्याग रोकें।

शत प्रतिशत नामांकन :–

माता शिक्षक संघ का यह भी दायित्व है कि अपने गांव के सभी बच्चों का नामांकन सुनिश्चित करायें।

विशेष समस्याओं का समाधान निकालना :–

यदि गांव की कोई विशेष समस्या हो विशेषकर बालिकाओं की तो उस पर चर्चा करना तथा समाधान निकालना।

शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन करवाना :–

माता शिक्षक संघ का यह दायित्व है कि अपने गांवों में शिक्षा सम्बन्धी निम्न गतिविधियों को आयोजित करायें :–

- मीना कैम्पेन
- माँ–बेटी मेला
- शिक्षा सम्मेलन
- बाल मेला
- महिला दिवस
- महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन
- रैली
- प्रभात फेरी

मासिक बैठक :–

माता शिक्षक संघ को प्रतिमाह बैठक कर अपने द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा करना चाहिए, योजना बनाना चाहिए तथा क्रियान्वयन करना चाहिए। बैठक का स्थान तथा तारीख पूर्व निर्धारित होना चाहिए।

विकलांग बच्चों को विद्यालय तक लाना :–

माता शिक्षक संघ अभिभावकों से सम्पर्क करें और विकलांग बच्चों को विद्यालय में लाये और शिक्षकों को बच्चे के विषय में भी जानकारी दें।

विद्यालय में अध्यापन कार्य :–

माता शिक्षक संघ अभिभावकों से कहें कि जब बच्चा पढ़कर वापस आता है तो घर में मातायें जरूर पूछें कि विद्यालय में क्या पढ़ाया गया जिससे बच्चे को एहसास हो कि घर में हमसे पूछा जायेगा।

बच्चे के खाने पर ध्यान देना :–

माता शिक्षक संघ माताओं को बतायें कि जब बच्चा विद्यालय जायें तो उसे खाली पेट न भेजे कुछ खिलाकर ही भेजे खाली पेट में बच्चे के दिमाग पर बहुत फर्क पड़ता है।

विद्यालय में बताई गयी बातों पर ध्यान देना :–

बच्चों को जो अच्छी आदतों के विषय में विद्यालय में सिखाई जायें उन्हें घर में भी करवायें।

स्वास्थ्य चेकअप :–

विद्यालय में समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण के लिए महिला शिक्षक संघ कहें और कार्ड भी देंखे।

सुगमकर्ता किन्हीं चयनित दों महिलाओं का नाम बतायें ?

तृतीय दिवस

गीत **<u>तोड़–तोड़ के बन्धनों को</u>**

तोड़–तोड़ के बन्धनों को देखो बहनें आती हैं -2

ओ देखो लोगों देखो बहनें आती -2

आयेगी जुल्म मिटायेगी, ओ तो नया जमाना लायेंगी

ओ तो नया जमाना लायेंगी।

तारीकी को तोड़ेंगी वो खामोशी को तोड़ेंगी -2

हाँ, मेरी बहनें खामोशी को तोड़ेंगी

मोहताजी ओर डर को, वो मिलकर पीछे छोंड़ेगी -2

निडर आजाद हो जायेंगी, अब वो सिसक–सिसक के न रोयेंगी

अब वो सिसक–सिसक के न रोयेंगी

तोड़–तोड़ के बन्धनों को ––––––––––––– जमाना लायेंगी -2

मिल कर लड़ती जायेंगी, ओ आगे बढ़ती जायेंगी -2

हाँ मेरी बहनें आगे बढ़ती जायेंगी -2

नाचेगी और गायेंगी वो फनकारी दिखलायेंगी

हाँ मेरी बहनें अब मिल कर खुशी मनायेंगी

गया जमाना पिटने का, हाँ जी गया जमाना मिटने का -2

हाँ जी गया जमाना मिटने का -2

तोड़–तोड़ के बन्धनों को ––––––––––––– जमाना लायेंगी

<u>खेल</u> :–

* कानाफूसी
* बालिकाओं के कार्य गिनवाना

<u>विश्वास खेल</u> :–

सभी प्रतिभागी खड़े होकर एक दूसरे के कन्धे पर हाथ रखेंगे और अपनी आंखें बन्द करेंगे। इसप्रकार एक लम्बी लाइन बनेगी। अब प्रशिक्षक सभी से कहेगा कि वह केवल आगे वाले का हाथ पकड़कर जिधर–जिधर जैसे–जैसे ले जायेगा सभी को उसके पीछे–पीछे कंधे पर हाथ

रखकर आंखे बन्द करके चलना होगा। सुगमकर्ता जैसी–जैसी आवाज करेगा सभी को वह आवाज दोहराना होगा। इस पूरी प्रक्रिया में सभी को सुगमकर्ता पर विश्वास करना है तथा प्रत्येक साथी को एक दूसरे पर विश्वास करना है।

<u>हमारी कक्षाएं – सीखने सिखाने वालों का समुदाय</u>

किसी भी कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। कक्षा व्यवस्था शैक्षिक कार्यक्रमों की धुरी है। अतः इसी के आधार पर अध्यापक एवं बच्चों के बीच रिश्ता बनता है, एक दूसरे को आपस में समझने का अवसर मिलता है तथा पढ़ाई का भी माहौल बनता है।

कहा जाता है कि – शिक्षा के क्षेत्र में जैसी कक्षा व्यवस्था होगी वैसा ही शिक्षण कार्य होगा। नये निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पुरानी चली आ रही पारम्परिक व्यवस्था से हट कर कुछ नई व्यवस्था बनानी होगी। क्योंकि कक्षा व्यवस्था पर ही शिक्षा का स्तर निर्भर करता है तथा आपसी रिश्ते, आपसी जगह, अपनी छवि एवं अपने बारे में समझ बनती है। साथ ही साथ समाज के बारे में एवं सत्ता के ढांचे के प्रति भी समझ बनती है।

अतः कक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चों को एक आदर्श समाज से परिचित करवाएं एवं समाज में उनकी जगह कहां है, यह वो समझ सके क्योंकि कक्षा व्यवस्था ही बच्चे के लिए समाज के ढांचे का छोटा नमूना है।

<u>कक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत निम्न बिन्दु समाहित हैं</u> :–

- ♣ कक्षा में भौतिक वातावरण कैसा हो ?
- ♣ कक्षा में भावनात्मक वातावरण कैसा हो ?
- ♣ कक्षा में अनुशासन कैसा हो ?
- ♣ कक्षा में किसके क्या अधिकार एवं कर्तव्य हों ?
- ♣ कक्षा में सत्ता का ढांचा कैसा हो ?
- ♣ कक्षा में रिश्ते किस प्रकार के हों ?
- ♣ कक्षा में बैठक व्यवस्था कैसी हों ?
- ♣ कक्षा में समय निर्धारण कैसा हो और कौन तय करें ?
- ♣ कक्षा में अनुशासन के नियम कैसे हों और कौन बनायें ?
- ♣ कक्षा में छात्र–छात्राओं के आपसी रिश्ते कैसे हों ?

<u>वर्तमान शिक्षा व्यवस्था :–</u>

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक के ही निर्देशों पर छात्र–छात्रा काम करते हैं। उनकी अपनी इच्छा का कोई मूल्य ही नहीं होता है। उनका अपना अस्तित्व दब जाता है। ऐसे में बच्चों का

बहुमुखी विकास होना असम्भव है। यदि कक्षा में बैठने की व्यवस्था अधिकारी–कर्मचारी, ऊँच–नीच एवं कुर्सी, जमीन की हो तो अध्यापक और बच्चों के बीच दूरियां स्थापित हो जाती है और अध्यापक एवं छात्र–छात्रा के बीच सहयोग की भावना का भी अभाव हो जाता है। अतः कक्षा व्यवस्था ऐसी नहीं होनी चाहिए, जहाँ समस्त सत्ता अध्यापक में ही निहित हो।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था निम्न प्रकार है :

- बालिकाओं का स्थान बालकों से कम महत्वपूर्ण है।
- सारी सत्ता अध्यापक के ही हाथ में होती है।
- बोलने का अधिकार अधिकांशतः केवल अध्यापक को ही होता है।
- बच्चों को बोलने का अधिकार, अध्यापक की इच्छा से मिलता है।
- अध्यापक और बच्चों के बीच दूरी का रिश्ता होता है।
- समय सारिणी अध्यापक के द्वारा ही निर्धारित की जाती है।
- बच्चे अलग–अलग पंक्ति में बैठते हैं और उनमें परस्पर दूरियां नजर आती हैं।
- कमजोर बच्चे पीछे ही बैठते हैं।
- अक्सर अध्यापक समस्त बच्चों को नाम से नहीं जानता है।
- तेज बच्चों पर ही अध्यापक का ध्यान रहता है।
- बालिका कक्षा की खास सदस्या के रूप में नहीं प्रतीत होती है।
- भौतिक वातावरण अनाकर्षक तथा नीरस होता है।
- अनुशासन के नियम बच्चों की सहभागिता के बिना सब अध्यापक ही बनाते हैं।

आदर्श कक्षा व्यवस्था कैसी हो ?

कक्षा व्यवस्था ऐसी हो :

⇒ **कक्षा का स्वरूप एक समुदाय के समान हो, जिसमें छात्र/छात्रा भी शिक्षक के साथ सक्रिय हों।**

⇒ **बच्चों और शिक्षकों के बीच एक आपसी विश्वास और सम्मान का रिश्ता हो।**

⇒ **कक्षा के सभी कार्यों में छात्र/छात्राओं की सहमति तथा सहयोग हो।**

⇒ **सभी बालक और बालिकायें अपने आप को सक्रिय तथा महत्वपूर्ण सदस्य समझें।**

⇒ **सभी बालक और बालिकायें अध्यापक के साथ मिलकर कक्षा व्यवस्था का निर्माण करें।**

ऐसे माहौल को बनाने के लिए बच्चों एवं शिक्षकों के बीच अपनत्व एवं सहयोगी मित्र का रिश्ता कायम होना अति आवश्यक है। बच्चों की क्रियाओं में डर एवं मजबूरी न हो कर प्रेमभाव तथा लगन होना चाहिए। जिससे वे हंसी–खुशी, सम्मान पूर्वक रूचिपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें।

कक्षा का माहौल :

उपर्युक्त समस्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए कुछ बिन्दु अति आवश्यक हैं। जिससे विद्यालय एवं कक्षा का माहौल उपयुक्त बन सके। जैसे –

हमारी कक्षा और हमारा विद्यालय एक परिवार या एक सीखने–सीखाने वालों का समुदाय बने और उसमें एक ऐसा भौतिक और भावनात्मक माहौल बनाएं जिससे कक्षा के सभी सदस्यों को (जैसे कि अध्यापक, बालक और बालिकाएं) महसूस हो कि उनका प्रेम तथा सम्मान के साथ स्वागत हो रहा है। यह स्वागत का वातावरण अध्यापक के नेतृत्व तथा पहल से तो बनेगा, परन्तु वह पूर्ण रूप से सफल तब होगा, जब इसे बनाने में बच्चों की भी सक्रिय सहभागिता होगी। कक्षा का ढांचा प्रजातांत्रिक हो जिसमें सभी सदस्य अपने आप को स्वतन्त्र, जिम्मेदार और बराबर पायें। सभी को अपनत्व महसूस हो और लगे कि यह कक्षा उनकी अपनी है। अध्यापक को लगे कि यह बच्चे उनके अपने हैं और बच्चों को भी महसूस हो कि अध्यापक उनके अपने हैं और सभी को लगे कि विद्यालय उनका अपना है, जैसा कि उनका अपना घर। कक्षा में आपसी सम्मान, प्रेम तथा विश्वास के रिश्तों का एक सूक्ष्म जाल हो जिसमें कक्षा के सभी सदस्य खुशी से सीखें और सीखायें।

कक्षा की बैठक व्यवस्था :–

कक्षा की बैठक व्यवस्था में अध्यापक की उचित स्थिति भी बड़ा महत्व रखती है। अतः कक्षा में बैठक व्यवस्था निम्न प्रकार होनी चाहिए –

- ◊ **कक्षा में बैठक व्यवस्था ऐसी हो कि जिससे अध्यापक/अध्यापिकाओं एवं छात्र/छात्राओं के बीच विभेदीकरण नहीं किया जा सकें और सभी आपस में बराबरी महसूस करें ।**
- ◊ **बैठक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें सभी बच्चें अध्यापक/अध्यापिका को देख सकें तथा अध्यापक भी प्रत्येक छात्र/छात्रा को देख सके।**
- ◊ **बैठक व्यवस्था बदलती रहनी चाहिए ताकि सभी बालक बालिकाओं को दोस्ती करने का अवसर मिले और अध्यापक के पास बैठने का अवसर प्राप्त हो।**
- ◊ **बच्चों को सीधी पंक्ति में न बैठाकर अध्यापक बच्चों को भी अर्ध–गोलों में बैठा सकते है और स्वयं भी उनके साथ बैठ सकते हैं।**

अगर जगह हो तो पूर्ण गोले में भी बैठा सकते हैं।

उचित बैठक व्यवस्था से निम्न प्रभाव पड़ते हैं –

- **परस्पर बालक/बालिका के बीच झिझक दूर होती है।**
- **अध्यापक/अध्यापिका के प्रति भय दूर होता है।**
- **आपसी रिश्ता कायम होता है। (बच्चों का बच्चों के प्रति तथा अध्यापक का बच्चों के प्रति)**
- **आपस में दूरियां समाप्त होती हैं। (बच्चों से बच्चों की तथा बच्चों से अध्यापकों की)**
- **सामुदायिकता का अनुभव होता है।**
- **प्रत्येक बच्चे को अपना अहम् स्थान एवं अपना महत्व भी महसूस होता है।**

<u>कक्षा में बात–चीत का माहौल बनाना</u> :–

बच्चों के साथ एक अपनत्व का रिश्ता बनाने के लिए तथा उनके सम्मान एवं आत्मविकास को दृष्टिगत रखते हुए कक्षा में बात–चीत का माहौल होना अति आवश्यक हैं। वर्तमान स्थिति में अध्यापक ही बोलते हैं और बच्चों को चुप रहनें का आदेश दिया जाता है। बच्चे ज्यादा बोलें, या आपस में बोलें तो उन्हें टोका जाता है। जायज़ बातचीत केवल एक प्रकार की मानी जाती है– अध्यापक पाठ्य सम्बन्धित प्रश्न पूछें और बच्चे जवाब दें। एक मित्रवत् बातचीत की हमारी कक्षाओं में कोई जगह नहीं है। ऐसी बातचीत बहुत आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा बच्चों को एक दूसरें के साथ और अध्यापक के साथ अपने अनुभवों की दुनिया बाँटने का मौका मिलता है। अध्यापक को बच्चों को समझने को अवसर प्राप्त होता है और बच्चे भी अध्यापक के और नजदीक आ सकते हैं। बच्चों को लगता है कि अध्यापक उनमें तथा उनकी दुनिया में रूचि ले रहे हैं और इस एहसास से वे अपने आप को बहुत गौरवन्वित महसूस करते हैं। अपने अनुभव बाँटने से उनका मूल्य बढ़ने लगता है और अपनी नजरों में भी उनका अपना मूल्य बढ़ने लगता है। विशेष रूप से बालिकाओं के लिए यह बातचीत का माहौल बहुत महत्व रखता है। लड़कियों के घर में भी और बाहर भी चुप रहने की सीख दी जाती है। इससे उनकी अपनी आवाज और इससे जुड़ा हुआ अस्तित्व दबा रहता है। जब कक्षा में अध्यापक अपने बारे में अपनी बात अपने तरीके से कहने के आमन्त्रित करते हुए कई अवसर प्रदान करते हैं तो इससे बालिकाओं की आवाज को बल मिलता है और उनके मनोबल को बढ़ावा।

इसलिए यह अति आवश्यक है कि हमारी कक्षाओं में हमारे बच्चों की चुप्पी टूटे और इस की जगह पर उनके बोलने, हँसने और सीखने की आवाजें गूँजें।

अध्यापक बच्चों से उनके बारे में रोज कुछ समय के लिए बातचीत करें, जैसे –

- **आपके हाल–चाल क्या हैं ?**
- **आज सुबह घर पर क्या किया ? क्या खाया ?**
- **रास्ते में क्या विशिष्ट बात देखी ?**
- **खाने में क्या अच्छा लगता है ?**
- **कौन सा खेल पसन्द है ?**
- **कभी किसी बाजार या मेले में गये तो उसका अनुभव पूरी कक्षा को बताइये ।**
- **पेड़–पौधे तथा पशु–पक्षी में से क्या अच्छे लगते हैं ? तथा उनका क्या महत्व है ?**
- **किस बात पर रोना आता है ? किस बात पर हँसना आता है ?**
- **घर में कौन–कौन है ?**

बात–चीत करने से बच्चों में निम्न <u>क्षमताओं का विकास</u> होता है :

- **बात समझ कर जवाब देना।**
- **अपनी रूचि पर भी ध्यान देना तथा रूचि के तहत अपने आपके महत्व को समझाना।**
- **आत्मविश्वास एवं आत्म छवि के प्रति सजग होते हैं।**
- **झिझक दूर होती है।**
- **बालने की क्षमता का विकास होता है।**

<u>ध्यान रहे</u> – बात–चीत के दौरान बालिकाओं को विशिष्ट महत्व देते रहना चाहिए, अन्यथा वे घर की प्राचीन परम्परा के तहत बोलने की मनाही को पूर्णतया आत्मसात् करती रहेंगी और उनकी स्व–अभिव्यक्ति क्षीण होती जाएगी तथा वे कक्षा में अपनी सदस्यता भी महसूस नहीं कर पाएँगी।

<u>कक्षा का भौतिक वातावरण</u> :–

कक्षा का भौतिक वातावरण भी स्वागतपूर्ण होना चाहिए। बच्चों को लगे की उनकी कक्षा उन्हें अपनी तरफ बुलाती है, पढ़ने–लिखने, हँसने–बोलने, गाने को आमन्त्रित कर रही हैं। कक्षा न केवल साफ–सुथरी, आकर्षक व सुव्यवस्थित होनी चाहिए बल्कि उसमें बालक और बालिकाओं को अपनी छवि भी नजर आनी चाहिए। दीवारों पर चित्र व चार्ट हों जो बच्चों की रूचि के अनुरूप हों एवं प्रेरणादायक भी हों तथा उसमें बालक–बालिकाओं दोनों के चित्र बने हों।

कक्षा के बाहर बालक और बालिकाओं के सहयोग से प्रांगण में फूलों की क्यारियाँ बनानी चाहिए। इसकी देख रेख की जिम्मेदारी भी बच्चों को ही दी जानी चाहिए।

कक्षा में सामूहिक भागीदारी :–

हमारी कक्षाओं का ढाँचा प्रजातान्त्रिक होना चाहिए, जिसमें सत्ता समान रूप से सब सदस्यों में वितरित हो। अध्यापक कक्षा का मुखिया जरूर हो, लेकिन उनका प्रयास यही रहे कि कक्षा के सभी कार्यों में सभी सदस्यों की भागीदारी रहें। शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य है– अच्छे भावी नागरिक का निर्माण। हम इस उद्देश्य की पूर्ति तभी कर पायेंगे जब बचपन से ही समुदाय में सहभागिता की आदत डालेंगे। बच्चों को कक्षा, और उसमें पाया गया ज्ञान भी तभी अपना लगेगा, जब उसकी व्यवस्था में उनकी भी सक्रिय भूमिका हो। विशेष रूप से बालिकाओं को सक्रिय बनाने के लिए उनकी सहभागिता पाना बहुत आवश्यक हैं समस्त कार्यों की भागीदारी में अध्यापकों को बालिकाओं पर विशिष्ट ध्यान देना चाहिए, जिससे उन्हें अपनी उपस्थिति एवं महत्व का अनुभव हो। उनका मनोबल बढ़े तथा उनकी क्षमता निखर कर सामने आयें।

लगातार अपनी कक्षा में सामूहिक भागीदारी बनाये रखने के लिए ये कुछ सुझाव हैं :–

- **समय सारिणी बनाते समय बच्चों की भी भागीदारी हो।**
- **कक्षा में प्रतिदिन अलग–अलग बच्चों को जिम्मेदारी बाँटनी चाहिए कि वे श्यामपट्ट साफ करके उस पर दिनांक एवं विषय लिखें।**
- **प्रतिदिन विषय–चयन एवं पाठ–चयन में भी बच्चों की इच्छा का ध्यान रखना चाहिए।**
- **विद्यालय प्रांगण में सफाई की दृष्टि से, कक्षा में छोटे–छोटे समूह बनाएं जो मध्यावकाश में कक्षा एवं प्रांगण की सफाई करें। कचरे व कागज को इकट्ठा करके फेकें। यह समूह बालक और बालिकाओं के मिले–जुले होने चाहिए।**
- **सप्ताहवार मॉनीटर बनाना एवं बदलना चाहिए। जिससे प्रत्येक बच्चे को मौका मिले। बालक और बालिकाओं को बारी–बारी मॉनीटर बनायें।**

आपसी रिश्ते :–

कक्षा में आपसी रिश्तों पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इससे बच्चे कक्षा में अपनापन महसूस करेंगे और हंसी–खुशी निर्भय होकर पढ़ाई पर ध्यान देंगे और कुशलतापूर्वक सीखेंगे। बच्चों को कक्षा अपनी लगेगी तो कक्षा में दिये गये ज्ञान को अपनायेंगे। बच्चों के मन में अगर यह दृढ़ विश्वास होगा कि अध्यापक इनको काबिल और सम्मान के योग्य समझते हैं, तो उनका मनोबल और आत्मसम्मान बढ़ेगा। विशेषतः बालिकाओं के लिए यह बहुत आवश्यक है। परम्परागत, बालिकाओं को बालकों से कम योग्य माना जाता है। वे यह संदेश घर में तो पाती ही हैं, अगर कक्षा में भी पायेंगी तो उनकी छवि एक कमजोर और अयोग्य व्यक्ति की होगी।

बच्चों के साथ बराबरी व सम्मान का रिश्ता जोड़ने के लिए यह कुछ सुझाव :–

1. **प्रत्येक बालक और बालिका का नाम जानने का प्रयास करें। इसलिए प्रत्येक बच्चे के लिए उसके नाम के कार्ड बनाकर सेफ्टी पिन से कमीज या फ्रॉक पर लगायें, तो बच्चों को बहुत अच्छा लगेगा और उनके नाम जानने में भी आसानी रहेगी।**
2. **उनके बारे में बातचीत द्वारा ज्यादा से ज्यादा जानकारी पाने की कोशिश करनी चाहिए।**
3. **उनकी घरेलू परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, उनकी कठिनाइयों को समझने की कोशिश करें। यह बालिकाओं के लिए अति आवश्यक है।**
4. **बच्चों को पास बुलाकर या उनके पास जाकर पढ़ाना चाहिए।**
5. **बच्चों का सम्मान करें – गलतियों पर प्यार से समझायें। उनका तिरस्कार न करें।**
6. **ध्यान रहे कि सम्बोधन की भाषा मीठी तथा सम्मानपूर्वक हो।**

बच्चों में परस्पर प्रेम, सहयोग और सम्मान के रिश्तों का विकास करने हेतु अध्यापक को प्रयास करते रहना चाहिए। बालक और बालिकाओं में मेल–जोल तथा मित्रवत् सम्बन्ध बनाना आवश्यक है ताकि वे एक दूसरे को बराबरी का दर्जा देते हुए आपस में समानता का प्रत्यय समझें।

बालक–बालिकाओं में आपसी सहयोग की भावना का विकास करना भी अति आवश्यक है तथा अध्यापक का प्रयास होना चाहिए कि वह मिले–जुले समूहों में कार्य करने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करें।

बच्चों की झिझक दूर करने के लिए और उनके आपस में तथा अध्यापक के साथ रिश्ता जोड़ने के लिये हम कुछ गतिविधियाँ और खेल करवा सकते हैं जैसे –

- टेढ़ी–मेढ़ी चाल –(खेल)
- लोग से लोग –(खेल)
- एक्शन पास करना –(खेल)
- रोचक चाल –(खेल)
- समूह में अभिनय करवाना एवं सामूहिक रूप से मौखिक एवं लिखित कहनी बनाना।
- कक्षा में अथवा विद्यालय में सामूहिक त्यौहार मनाना।
- कक्षा में सामूहिक पढ़ाई करवाना।
- सभी कार्य खेल तथा गतिविधियों में बालक और बालिकाओं की मिली–जुली सहभागिता रखना।

<u>निष्कर्षत</u> : उक्त समस्त बिन्दुओं के पश्चात् विशिष्ट रूप से हम निम्न लक्ष्य तक पहुँचते हैं कि–

- **अध्यापक बालक/बालिकाओं का बराबर प्रतिनिधित्व रखे।**
- **बच्चों का सम्मान करें। गलतियों पर प्यार से समझायें। उनका तिरस्कार न करें।**
- **अनुशासन के साथ ही बच्चों की सहभागिता व स्वतः निर्णय की क्षमता का विकास करना है।**
- **बच्चों की रूचियों का ध्यान रखें। उनकी रूचि के अनुसार खेल करवायें। कक्षा संचालन तथा विषय–पाठ चयन से आत्मविश्वास एवं विश्वास का माहौल बनता हैं।**
- **कक्षा में प्रिय शब्दो से बच्चों को सम्बोधित करें तथा बच्चों को प्यार से अपने पास बुला कर पढ़ायें।**
- **मुख्यतः बालिकाओं पर विशिष्ट ध्यान देते हुए उन्हें उनके महत्व व मूल्य का एहसास करवाएं तथा उनक आत्म सम्मान एवं छवि को निखारने में सहयोग दें।**

माह आधारित एजेन्डा

<u>मासिक बैठक हेतु एजेण्डा कैलेण्डर</u>

क्र० सं०	माह	एजेण्डा	गतिविधि
1.	मई–जून	विद्यालय न जाने वाले बच्चों को चिन्हित करना।	अभिभावक बैठक जन सम्पर्क मीना कैम्पेन कला जत्था
2.	जुलाई–अगस्त–सितम्बर	नामांकन	नामांकन दिवस मनाना बाल मेला प्रभात फेरी माँ–बेटी मेला
3.	अक्टूबर–नवम्बर–दिसम्बर	नियमित उपस्थिति का अवलोकन	कक्षाओं का अवलोकन विद्यालय भ्रमण बच्चों के साथ बैठक बच्चों की समस्या सुलझाना

4.	जनवरी–फरवरी–मार्च	शालात्याग रोकना	बाल मेला अभिभावकों की बैठक शिक्षा सम्मेलन महिला–दिवस कला जत्था
5.	अप्रैल–मई	परीक्षा में शत प्रतिशत उपस्थिति	विद्यालय स्तरीय बैठक बच्चों से बैठक

M.T.A, W.M.G प्रशिक्षण बजट

तीन दिवसीय ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण

प्रतिभागियों की संख्या -25

प्रशिक्षण दिवस -3

मद	व्यय विवरण
स्टेशनरी	500/-
टी०वी०, वी०सी०आर० जनरेटर	1200/-
भोजन 25x40x3	3000/-
थैला 25x50	1250/-
दरी	100/-
बैनर	100/-
दस्तावेजीकरण	200/-
प्रशिक्षक मानदेय 3x50x3	450/-
आकस्मिक व्यय	250/-
	7000/- कुल व्यय एक प्रशिक्षण
	सात हजार रूपये मात्र कुल व्यय

कुल चयनित मॉडल क्लस्टर -7

1 माडॅल क्लस्टर में गाँव, मझरे, पुरवे = 30

जनपद में होने वाला व्यय =7x3x7000=14,7000/-

चौदह लाख सात हजार रूपये मात्र व्यय

माता शिक्षक संघ के लिए कुछ आवश्यक बातें :–

यहां कुछ बिन्दु दिये जा रहे हैं। ये बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं। सुगमकर्ता इन बिन्दुओं की जानकारी दें।

- विद्यालय जाते समय यदि बच्चा भूखे पेट रहता हैं तो वह मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर हो जायेगा।
- सप्ताह में एक बार विद्यालय जाकर उनका बच्चा कैसा सीख रहा है अवश्य पूछे।
- जब बच्चा विद्यालय से घर आयें तो उससे अवश्य पूछें कि क्या पढ़कर आया है और उसे सुनें।
- घर में शिक्षा का वातावरण दें।
- बच्चों की प्रतिक्रिया को अध्यापक से जाकर अवश्य बतायें।
- यदि बच्चा विकलांग है तो उसका विशेष तौर से ख्याल रखें उसे पूरा प्यार व सम्मान दें।
- बच्चों के कपड़े, साफ–सुथरें हों, नाखून व बाल कटे हों इस बात का विशेष ख्याल रखें।
- क्या आप एक आदर्श माता हैं ?
- क्या आप आदर्श अध्यापक हैं ?
- माता का विद्यालय में क्या योगदान होना चाहिए ?
- विद्यालय में जाकर अपने बच्चे की उपस्थिति का सत्यापन करें।
- यदि एकल अध्यापक विद्यालय है तो गाँव की महिलाएं बारी–बारी से विद्यालय जाकर व्यवस्था में सहयोग करें।
- बच्चे के स्वास्थ्य परीक्षण का माताएं विशेष ध्यान दें। यदि गाँव के कुछ बच्चे धीमी गति से सीख रहे हैं तो उनके लिए गाँव के किसी पढ़े लिखे व्यक्ति द्वारा अतिरिक्त कक्षा का संचालन करायें।
- बच्चों द्वारा बनायी गयी सामग्री का प्रदर्शन करें।
- बच्चों के कपड़ों में बटन उनकी बहनें लगा दें।
- बच्चे में नशे की आदत न पड़ें इसका ख्याल रखें।
- यदि बच्चे ने विद्यालय आना बन्द कर दिया तो माता शिक्षक संघ उनके घर जायें।

- ➟ यदि गाँव की कोई विशेष उपलब्धि या समस्या हो तो उसे जिलाधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी को पत्र लिखें।